

भारतीय संदर्भ में खुशी पाठ्यचर्या का समालोचनात्मक विश्लेषण

A Critical Analysis of Happiness Curriculum in Indian Context

प्रतिभा गुप्ता

शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ई-मेल : pratibhagupta0097@gmail.com

ओम प्रकाश

शोधार्थी, शिक्षा विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

ई-मेल : govindop@gmail.com

सारांश :

विगत कुछ वर्षों से शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक रूप में सफल होना मात्र रह गया है। जिसके कारण मानव स्वयं को यंत्रस्वरूप समझने लगे हैं और पैसा कमाने के लिए अपनी सुख शांति को भी दाव पर लगा देते हैं फिर भी संतुष्ट नहीं रहते हैं। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में कुछ ऐसे बदलाव किए गए ताकि व्यक्ति में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके जिससे वह खुशी और शांति का अनुभव कर सके। इस बदलाव को मूर्तरूप देने के लिए दिल्ली सरकार ने आनंदमयी पाठ्यक्रम का निर्माण किया जिसे दिल्ली के विद्यालयों में कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक में क्रियान्वित किया गया। जोकि विविध प्रकार की गतिविधियों कहानी, माइंडफुलनेस इत्यादि पर आधारित है। प्रस्तुत शोध आलेख में खुशी पाठ्यचर्या का विषय वस्तु विश्लेषण के माध्यम से भारतीय संदर्भ में एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य बिंदु : खुशी पाठ्यचर्या, भारतीय संदर्भ

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) में शिक्षा के उद्देश्यों को बहुत विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विद्यार्थियों को अपने विचारों को रखने एवं दूसरों के विचारों एवं भावनाओं के प्रति संवेदनशील होने के लिए जोर दिया गया है। जिसका उद्देश्य वे स्वयं एक जिम्मेदार मनुष्य और दूसरे मनुष्यों के प्रति सहानुभूति, प्रेम एवं दया का भाव रख सकें हैं। जिससे सामाजिक सोहार्द्र और समरसता स्थापित हो सके, जिसके परिणामस्वरूप सभी मनुष्य अपने जीवन को खुशहाल बना सकें। दिल्ली सरकार द्वारा 2018 में विद्यालयी स्तर पर एक पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। हैप्पीनेस करीकुलम का निर्माण कक्षा नर्सरी से कक्षा आठ तक के विद्यार्थियों के लिए किया गया है। जिसका उद्देश्य बच्चों का सम्पूर्ण विकास करना है जिसके द्वारा वे वर्तमान और भविष्य में खुशी और सफलता को प्राप्त कर सकें। जिससे विद्यार्थियों के स्वयं और समाज के मध्य स्थायी और सामंजस्यपूर्ण वातावरण

का निर्माण किया जा सके। हैप्पीनेस करीकुलम को निम्नलिखित अनुशासनों के आधार पर विश्लेषित किया जा सकता है। यह विश्लेषण इस पाठ्यचर्या को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

पृष्ठभूमि और संदर्भ के आधार पर (Basis of Background and Context)

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों के विषय में किसी भी प्रकार के प्रारम्भिक जानकारी के महत्व की तरफ ध्यान आकर्षित नहीं किया गया प्रतीत होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक और सामाजिक पृष्ठभूमि क्या है? वह उनकी सीखने एवं सीखाने की प्रक्रिया में क्या भूमिका निभाती है? इन सब बातों का ध्यान एक शिक्षक को अवश्य होना चाहिए। जिससे सीखने और सीखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।

मानसिक अवस्था (Mental Status)

हैप्पीनेस पाठ्यक्रम में माइंडफुलनेस गतिविधि के माध्यम से सजग करने का अभ्यास कराया जा रहा है। ध्यान और सजगता बनाए रखने के लिए कक्षा-कक्ष में उचित दिशा निर्देश के साथ ही साथ कुछ अन्य बातों की ओर भी ध्यान देना चाहिए जैसे विद्यार्थी किस प्रकार की दिनचर्या को अपनाते हैं और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति की समझ रखनी होगी, कि क्या वे इस गतिविधि को करने के लिए तत्पर हैं अथवा नहीं। यदि कोई समस्या है तो उसका कारण जनाना चाहिए एवं उसका समाधान करना चाहिए। तत्पश्चात गतिविधि को शुरू करना चाहिए। जिसेसे यह गतिविधि अत्याधिक प्रभवशाली सिद्ध हो सकती है।

रुचि एवं तत्परता (Interest and Readiness)

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रुचि को कैसे जाना जाएगा कि वे लगातार इस गतिविधि को करने के लिए या शुरुआत से ही उत्साहित हैं या नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं की मात्र शिक्षक के निर्देशानुसार ही भूमिका निर्वहन कर रहे हों और यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि उन्हें इस गतिविधि के माध्यम से आनंद की अनुभूति हो रही है अथवा नहीं।

स्वतंत्रता (Freedom)

बच्चों के लिए स्वयं को व्यक्त करने के लिए निश्चित आयामों का निर्धारण किया गया है, उन सभी गतिविधियों को आनंदमयी पाठ्यचर्या में सम्मिलित किया गया है। ऐसा भी हो सकता है कि बच्चे इनके माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने में सक्षम न हों। क्या ऐसा संभव है कि पाठ्यचर्या में इस तरह का लचीलापन हो कि अन्य विकल्पों का सर्जन किया जा सके, अथवा शिक्षक में दूसरे विकल्पों को चयन करने की क्षमता अथवा आजादी मिलती है या नहीं।

समयावधि (Time Duration)

माइंडफुलनेस की प्रक्रिया में जो समय का विभाजन हुआ है वह बहुत ही क्रमबद्ध है यदि किसी बच्चे का प्रथम चरण छूट जाता है तो आगे की प्रक्रिया के संचालन में बच्चे अपनी सहभागिता को कैसे सुनिश्चित कर सकेंगे। गतिविधि अपूर्ण होने के कारण जो उसका प्रभाव उत्पन्न होना चाहिए शायद वह न हो पाए। अतः विभिन्न गतिविधियों के मध्य समय चक्र को बहुत ही कठोर तरीके से क्रियान्वित न किया जाए।

व्यक्तिगत विभिन्नता का स्थान (Space for Individual Differences)

भारतीय परिवेश विभिन्न प्रकार की विभिन्नता से परिपूर्ण है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं अध्यात्मिक विभिन्नताएं शामिल हैं इन सभी को विद्यालय में समान अधिकार एवं सहभागिता के अवसर प्राप्त होने चाहिए। उदाहरण के रूप में यदि हम माइंडफुलनेस गतिविधि को देखें जिन्हें विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया गया है जैसे माइंडफुल लिस्निंग (ध्यानपूर्वक सुनना) माइंडफुल सीइंग (ध्यानपूर्वक देखना) आदि गतिविधि को कराया जाता है, परंतु प्रश्न यह उठता है कि नेत्र से दिव्यांग विद्यार्थी (ध्यानपूर्वक देखना) एवं बधिर विद्यार्थी (ध्यानपूर्वक सुनना) जैसी गतिविधि में कैसे सहभाग करने में स्वयं को सक्षम समझेंगे? इस समस्या से कैसे निपटा जाय, इसके और क्या विकल्प हो सकते हैं इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। क्या शिक्षक कक्षा की ऐसी स्थिति के प्रति संवेदनशील हैं? क्योंकि वर्तमान में हमारा उद्देश्य सभी को समावेशित करने का है किसी भी विद्यार्थी को किसी भी कक्षा में स्वयं को एक्सक्लूडेड महसूस नहीं होना चाहिए।

गतिविधियों में अक्रमबद्धता (Discontinuity in Mindfulness Activity)

हैप्पीनेस करीकुलम में ध्यान देने की प्रक्रिया के लिए केवल सोमवार का ही दिन निश्चित किया गया है, यानि सप्ताह में एक बार और प्रतिदिन 2-3 मिनट शुरुआत और 2-3 मिनट अंत में कराई जाती है। ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रतिदिन एक निश्चित समय के लिए किया जाए तभी उसके परिणाम प्रभावी होने की संभावना होती है मात्र एक दिन ध्यान की कक्षा से सजग हो पाना अतिशयोक्ति के सिवाय और कुछ भी नहीं प्रतीत होता है।

सोशल-इमोशनल लर्निंग (Social and Emotional Learning)

हैप्पीनेस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सामाजिक-संवेगात्मक विकास से अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित प्रतीत होता है। वर्तमान जीवन की मूलभूत आवश्यकता है कि आज के प्रतिस्पर्धा के युग में व्यक्ति को स्वयं के साथ एवं दूसरों के साथ किस तरह से सामंजस्य रखना है यह आना चाहिए, जोकि सफल होने के लिए एक आवश्यक शर्त है, परंतु खुशी की अनुभूति कभी-कभी परिणाम के रूप में हो सकती है, किन्तु सदैव हो यह निश्चित नहीं है। सोशल-इमोशनल लर्निंग के विभिन्न आयामों का वर्णन अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से किया गया है।

स्व-जागरूक (Self-awareness) एवं स्व-प्रबन्धन (Self-management)

ध्यान की गतिविधि के माध्यम से विभिन्न साधनों द्वारा स्व-जागरण का अभ्यास कराया जा रहा है। ब्रीदिंग गतिविधि के माध्यम से मन को एकाग्र करने का अभ्यास कराया जाता है। जिससे तनाव को कम करने में सहायता मिलती है। भावनाओं के वर्गीकरण गतिविधि के द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं के संवेगों को समझने और पहचानने का अवसर मिलता है, जो कि स्व-जागरण को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही साथ ध्यान, हार्टबीट और विचारों के ट्रैफिक माध्यम के द्वारा विद्यार्थियों को विचारों और भावनाओं को संतुलित करने की प्रक्रिया कराई जाती है एवं उनकी अभिव्यक्ति के लिए अवसर भी प्रदान किया जाता है।

सोशल अवेर्नेस (social Awareness), (Responsible Decision Making)

विभिन्न कहानियों के माध्यम से बच्चों में सामाजिक जागरूकता, संबंध कौशल और निर्णय करने का अभ्यास एवं इन पर चर्चा करने की गतिविधि पर भी ध्यान आकर्षित करने का प्रयास भी किया गया है। उबनटु नामक कहानी के द्वारा विद्यार्थियों में सहयोग की भावना को पोषित करने का प्रयास किया गया है। विपुल का निर्णय कहानी के

द्वारा दुविधा की स्थिति से बाहर निकलकर उचित निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया गया। शिक्षा का अर्थ कहानी के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक व्यक्ति एवं दूसरों के प्रति सहानुभूति का गुण कैसे विकसित किया जाए इस बात की सीख मिलती है।

भारतीय संदर्भ में हैप्पीनेस (आनंदमयता की संकल्पना) (Happiness Curriculum in Indian Context)

भारतीय संदर्भ में खुशी को अलग-अलग रूपों में वर्णित किया गया है जबकि हैप्पीनेस करीकुलम में खुशी का दार्शनिक आधार के रूप में ए. नागराज के हैप्पीनेस के मॉडल को लिया गया है। जिसके तीन आयाम हैं जिसे हैप्पीनेस त्रय की संज्ञा दी गयी है। संवेदनाओं के द्वारा, संबंधों के स्थिर भाव से, समझ और सजगता से हैप्पीनेस की प्राप्ति होती है। ये तो केवल माध्यम हो सकते हैं, वास्तव में खुशी है क्या? खुशी का वास्तविक स्वरूप क्या होना चाहिए? इस प्रकार के जब प्रश्न सामने आते हैं तो इनका संदर्भ विभिन्न भारतीय विचारधाराओं में विशद रूप से दिखाई देता है-

बौद्ध दर्शन के अनुसार, जब हम अपनी सभी कामनाओं को शून्य कर दें तो, हमें वास्तविक सुख की प्राप्ति होगी, अर्थात् निर्वाण की प्राप्ति होना। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार, सामान्यतः हम सुख को बाहरी कारकों से जोड़ देते हैं, जो केवल इंद्रियों के द्वारा उत्पन्न होता है, परन्तु इसमें तीन प्रकार के सुख के बारे में बात की जाती है, सात्विक या शुद्ध सुख : यह वह सुख है जो आत्मा के उठान से उत्पन्न होता है “ जो पहले विष जैसा प्रतीत होता है, परंतु अंत में अमृत समान प्रतीत होता है। यह शुद्ध बुद्धि से उत्पन्न होता है जो आत्म ज्ञान में स्थित है (श्लोक 37), राजसिक या परिणाम –उन्मुख सुख : सुख को रजोगुण तब खेते है जब यह इंद्रियों जनित होता। ऐसा सुख पहले अमृत के समान बाद में विष के समान होता है (श्लोक 38), तामसिक सुख : वह सुख जो आदि से अंत स्वयं के स्वभाव को ढके रहता है, और जो नींद, आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न होता है (श्लोक 39)। योग दर्शन में ध्यान की प्रक्रिया से पूर्व कुछ अन्य चरणों का वर्णन किया जाता है जिसके बिना हम जिस प्रकार से सजग होने का लक्ष्य रख रहे होते हैं वो मात्र क्षणभंगुर ही होता है। अतः यम, नियम, आसान के चरणों को भी सम्मिलित करना चाहिए। सौंदर्यशास्त्र का अभाव (Lack of Aesthetic view in Happiness curriculum) भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में विभिन्न प्रकार की कलाओं का वर्णन किया गया है, जैसे संगीत और नर्त्य ऐसे कलाएं जिन्हेके माध्यम से व्यक्ति वास्तविक आनंद की अनुभूति करता है या किसी व्यक्ति को किसी रमणीय स्थान पर, प्रकृति के साथ कुछ समय बिताने पर खुशी मिलती हो, ऐसे कलाओं को हैप्पीनेस करीकुलम में कोई स्थान नहीं दिया गया है। कहानी गतिविधि पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है हो सकता है किसी बच्चे को इनके द्वारा कोई खुशी ही न महसूस होती हो।

हैपीनेस करीकुलम नैतिक शिक्षा के रूप में (Happiness Curriculum as Moral Education): अभिव्यक्ति खंड और कहानी के माध्यम से नैतिक मूल्यों एवं संवेग को समझाने और विकसित करने का उत्तम प्रयास किया गया है, लेकिन हम प्रश्नों के द्वारा जैसे कि आपने किसी का सम्मान या अपमान किया है, यदि इन प्रश्नों के उत्तर

जैसे हम चाहते हैं वैसे ही मिल रहे हैं, लेकिन उनके व्यवहार और उस व्यवहार की निरन्तरता को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है इसका प्रभाव अल्पकालिक या दीर्घकालिक होंगे।

सभी विषयों को आनंदमयी पाठ्यक्रम में शामिल करना (Incorporation of other subject In Happiness Curriculum)

सभी विषयों को खुशी पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है, जिनकी शिक्षण विधियों को एकीकृत व्यक्तित्व और समग्र विकास के लिए मस्ती और खेल की उच्च भावना को बढ़ावा देना होना चाहिए। कहानियां सुनाना, नाटक और बहुत कुछ कहना सुखद पाठ्यक्रम में अच्छी तरह से शामिल हो सकता है। अकिनपेलु (1984) द्वारा उद्धृत क्विंटिलियन कहता है कि बचपन की शिक्षा में खेल, इनाम और प्रशंसा की विशेषता होनी चाहिए। यह शिक्षार्थियों की खुशी और आत्म-अनुभूति को सुगम बनाने के लिए है। सीखने के क्षेत्रों में से एक जो शिक्षार्थियों और अन्य लोगों की खुशी के लिए प्रतिबद्ध है, वह है सकारात्मक मनोविज्ञान, अन्यथा खुशी के विज्ञान के रूप में जाना जाता है। यह क्षेत्र शिक्षार्थियों में खुशी के साधन के रूप में रचनात्मकता, दृढ़ता, दया और टीम वर्क सिखाता है (यूनेस्को, 2017)। हैप्पीनेस पाठ्यक्रम शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षार्थियों पर लागू होता है क्योंकि खुशी उम्र, लिंग और शैक्षिक स्तर पर ध्यान दिए बिना सभी के लिए होती है। खुशी का पाठ्यक्रम इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि यह शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी के लिए आनंद उत्पन्न कर सके।

शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher):- सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों की सक्रिय खुशहाल भागीदारी शिक्षक द्वारा सुगम की जानी चाहिए। खुशी शिक्षा शिक्षक को कक्षा में प्रवेश करने से पहले यह सुनिश्चित करने के लिए पहले खुद पर काम करना चाहिए कि वह खुश है। उसका रूप शिक्षार्थियों को आकर्षित करने वाला होना चाहिए, डराने वाला नहीं। उसे सभी विषयों को रोमांचक तरीके से पढ़ाना चाहिए। शिक्षार्थियों का अध्ययन करना और उनमें से उदास लोगों की पहचान करना और फिर अन्य शिक्षकों, परामर्शदाताओं, प्रशासकों, माता-पिता और यहां तक कि अन्य शिक्षार्थियों के समर्थन से उनकी समस्या पर काम करना खुशी शिक्षा शिक्षक की भूमिका है। शिक्षक इस महत्वपूर्ण भूमिका को सक्षम रूप से निभाने के लिए, उसे खुशी के मनोविज्ञान और खुशी के दर्शन के ज्ञान में पारंगत होना चाहिए। ये मनोविज्ञान और दर्शन के क्षेत्र हैं जो खुशी को बढ़ा सकते हैं।

शिक्षा मजेदार होनी चाहिए सीखने में शिक्षार्थियों की रुचि को जगाने और सुखद सीखने को प्राप्त करने के लिए, कॉमैनियस (अकिनपेलु, 1984) बताते हैं कि एक बच्चे को सीखने का एक कारण दिया जाना चाहिए। इसी तरह डेवी (अकिंसन्या, 2015) इस बात पर जोर देते हैं कि सीखाना शिक्षार्थी की रुचि के अनुसार होना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षक को शिक्षार्थियों को पाठ्यचर्या की सामग्री, विधियों और खुशी शिक्षा के अन्य घटकों के मूल्यों के बारे में बताना चाहिए ताकि वे घटकों की सराहना कर सकें और खुश रह सकें। खुशी शिक्षा शिक्षकों को उपयोगितावादी जीवन पर अधिक जोर देना चाहिए ताकि शिक्षार्थी विकसित हों और समाज के अन्य सदस्यों के लिए खुशी और कल्याण के महत्वपूर्ण स्रोत बन सकें।

सीखने का माहौल (learning Environment):- सीखने का माहौल स्वर्ग होना चाहिए जहां आनंदमय सीखने के अनुभव के लिए सभी हटाने योग्य बाधाएं दूर हो जाएं। सीखने के माहौल को खुशनुमा बनाने के लिए पर्याप्त

संख्या में अनुभवी और समर्पित सुरक्षा कर्मियों की सहायता से यह शांतिपूर्ण और सुरक्षित होना चाहिए। साथ ही, सीखने का माहौल रोमांचक सीखने की सुविधाओं जैसे कंप्यूटर, किताबें और अन्य से सुसज्जित होना चाहिए। हैप्पीनेस स्कूल के सीखने के माहौल को सुंदर बगीचों, आकर्षक पेंटिंग, शिक्षाप्रद मूर्तियों और शिलालेखों, पेड़ों से सजाया जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षार्थियों को उनके वातावरण में पर्याप्त आकार के खेल उपकरण उपलब्ध कराए जाएं। बुनियादी सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, पंखा शौचालय आदि का उचित प्रबंध किया जाना चाहिए।

माता-पिता की भूमिका एवं फीडबैक (Parents role and feedback) :

हैप्पीनेस करीकुलम के द्वारा विद्यार्थियों को अपने अनुभवों को घर पर साझा करने का सुझाव दिया जाता है, लेकिन क्या वे अपने अनुभवों को साझा करते हैं उन अनुभवों के विषय में उनके माता-पिता को कैसे समझाते हैं एवं उनके व्यवहार में किस तरह के परिवर्तन आते हैं ऐसा जानने के लिए व उनकी किसी भी प्रकार से विद्यालय में सहभागिता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए, जिससे उनकी व्यवहार में क्या सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं उसको देखा जा सके। यदि सकारात्मक परिवर्तन नहीं हो रहे हैं तो उसके लिए उचित योजना बनानी चाहिए। साथ ही साथ माता-पिता को भी उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव दिए जाने चाहिए। जिससे घर और विद्यालय दोनों का वातावरण सुखमय बन सके।

तकनीकी का अभाव (Lack of Technology)

21वीं शताब्दी में आज प्रत्येक व्यक्ति के दिन की शुरुआत मोबाइल यानि तकनीकी के माध्यम के से होती है। यदि हम हैप्पीनेस करीकुलम में तकनीकी को शामिल कर लें तो यह पाठ्यचर्या बच्चों को और अधिक रुचिकर एवं प्रेरित रखने का कार्य करती है। क्योंकि विभिन्न अभिक्षमता वाले विद्यार्थियों एवं अन्य सभी के लिए किसी भी गतिविधि को वीडियो अथवा संगीत के द्वारा कराया जाए तो वो स्वयं को अत्यधिक जुड़ा हुआ महसूस करेंगे, जिससे वांछित परिणाम प्राप्त हो सकेंगे।

शिक्षकों में आनंदमयी पाठ्यक्रम की समझ : इस पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण सफलता को प्राप्त करने की जिम्मेदारी शिक्षक के कंधों पर डाली गई है। यदि शिक्षक ने अपना कार्य सजगता और संवेदनशीलता के साथ नहीं किया तो इसके उत्तम परिणाम प्राप्त होते नहीं दिखेंगे, क्योंकि इसके लिए शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण के साथ उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी संतुलित करना आवश्यक होगा, क्योंकि जिस प्रकार की गतिविधियों का निर्माण किया गया है उन्हें मात्र निर्देश के रूप में क्रियान्वयन नहीं करना है जैसा कि पाठ्यक्रम में उल्लेखित है कि अब शिक्षक इस गतिविधि को कराएं। क्योंकि यह जिस खुशी की बात वर्तमान में करता है उसका निरंतर होना मुश्किल सा प्रतीत होता है। अतः शिक्षक को बहुत सावधानीपूर्वक एवं आत्म मूल्यांकन के उपरांत ही इसे जागृत एवं जागरूक करने की प्रक्रिया में सहभागीता को सुनिश्चित करना होगा। शिक्षक की मनःस्थिति को संतुलित और प्रेमपूर्ण भाषा बोलने वाला, जीवन को विभिन्न परिस्थितियों और संदर्भों को समझने की योगताओं से युक्त होना चाहिए, क्योंकि हम केवल कुछ बताने या रटाने नहीं जा रहें बल्कि कोई ऐसा है, जिसका जीवन अंधकारों की आंधियों से भरा हुआ है

उसे प्रकाशवान बनाने जा रहे हैं। जब तक हम स्वयं प्रज्ज्वलित नहीं होते हैं तब तक हम दूसरों को प्रज्ज्वलित नहीं कर सकते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion):

शारीरिक, संज्ञानात्मक, सोशल-ईमोशनल, आध्यात्मिक, नैतिक जोकि सम्पूर्ण विकास के लिए नितांत आवश्यक है श्री अरविन्द के द्वारा दी गई संपर्ण शिक्षा की संकल्पना भी उपर्युक्त सभी पक्षों (शारीरिक, जीवंत, मानसिक, आत्मिक और आध्यात्मिक) के विकास को महत्वपूर्ण मानती है, यदि हम मानव के खुशहाल जीवन की कामना करते हैं तो हमें व्यक्ति के सभी पक्षों को विकसित करना होगा, परंतु हैप्पीनेस करीकुलम में सम्पूर्ण विकास के कुछ पक्ष अछूते हुए नजर आते हैं। यह करीकुलम के वजाय एक सेलेबस अथवा मॉड्यूल लगता है, क्योंकि करीकुलम एक विस्तरत रूप है जिसमें पाठ्य सहगामी क्रियाएं सम्मिलित होती हैं। हैप्पीनेस करीकुलम सैद्धांतिक रूप में तो उत्तम है, परंतु इसको जमीनी स्तर पर मूल रूप में क्रियान्वित करना थोड़ा सा चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए हमें सभी हितधारकों को उनके वास्तविक कार्य के प्रति चेतनामय बनाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ओड़, एल. के. (2022). *शिक्षा की दार्शनिक प्रष्ठभूमि*. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
2. कॉलाबोरेटिव फॉर ऐकडेमिक, सोशल एण्ड ईमोशनल लर्निंग (CASEL) (2005) *सेफ एण्ड साउन्ड: ऐन एजुकेशनल लीडर्स गाइड टु*
3. खोखर, टी. एवं दहिया, वी. टी. (2024). द इंटरप्ले ऑफ पॉजिटिव एजुकेशन : हैप्पीनेस करीकुलम एज ए ड्राइवर फॉर लाइफ स्किल्स एण्ड सोशल स्किल्स एनहेन्समेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन (आईजेई)*. 5(1). 33-40.
https://iaeme.com/MasterAdmin/Journal_uploads/IJE/VOLUME_5_ISSUE_1/IJE_05_01_004.pdf
4. द परसुएट ऑफ हैप्पीनेस इन एजुकेशन : ए रिसर्च रिपोर्ट (2023). राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली.
5. नागराज, ए. (2015). *फिलोसॉफी ऑफ ह्यूमन बिहैवियर*. जीवन विद्या प्रकाशन.
6. पचौरी, जी. एवं पचौरी, आर. (2015). *उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका*. आर. लाल बुक डिपो.
7. पतंजलि, *पतंजलि योग सूत्र* (बी. के. एस. आयंगर; अनु.) प्रभात प्रकाशन.
8. यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (2016). हैप्पी स्कूल! ए फ्रेमवर्क फॉर लर्नर वेल-बीइंग इन द एसिया पैसिफिक. यूएनईएससीओ
9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
<https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/hindi.pdf>

10. हैप्पीनेस करीकुलम (2019). राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली.
https://www.edudel.nic.in/welcome_folder/happiness/HappinessCurriculumFramework_2019.pdf
11. श्रीमद्भगवद्गीता श्लोकार्थसहित (परिवर्धित संस्करण). गीताप्रेस, गोरखपुर.